Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

भाग - 3

आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय - 9

उपनिवेशवाद और देहात

भाग - 7

Pritesh Joshi

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

6. इस्तमरारी बंदोबस्त के बाद बहुत सी जमींदारियां क्यों नीलाम कर दी गयी ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बंगाल के गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में भू-राजस्व वसूली की एक नयी पद्धति प्रचलित की जिसे 'स्थायी बंदोबस्त', 'जमींदारी प्रथा' अथवा 'इस्तमरारी बंदोबस्त' के नाम से जाना जाता है।

लगान स्थायी कर दिया गया था।

जमींदार द्वारा समय पर लगान अदा नहीं किये जाने पर सूर्यास्त कानून के तहत जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इसके अनेक कारण थे –

1. कम्पनी द्वारा निर्धारित प्रारम्भिक राजस्व माँगें अत्यधिक ऊँची थीं।
2. भू–राजस्व की ऊँची माँग का निर्धारण 1790 के दशक में किया गया था इस समय कृषि उत्पादों के मूल्य कम थे।
3. जमींदारों के अनेक विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया था –
4. जमींदार शक्ति के प्रयोग द्वारा राजस्व वसूली नहीं कर सकते थे।
5. रैयत समय पर लगान जमा नहीं करवाते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

7. पहाड़िया लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से किस रूप में भिन्न थी ?

कुदाल v/s	हल
पहाड़िया	संथाल
झूम खेती	कृषक
वनोपज	घुमन्तु

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

- पहाड़िया लोग राजमहल की पहाड़ियों के आस पास रहते थे और जंगल से प्राप्त वस्तुओं से आजीविका चलाते थे। वनोपज
- संथाल लोग मुख्यतः कृषक थे। ब्रिटिश सरकार ने इन्हें जमीनें देकर राजमहल की पहाड़ियों की तलहटी में बसने के लिए तैयार किया था। जिससे सरकार के राजस्व में वृद्धि की जा सके।
- पहाड़िया लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से कई रूपों में भिन्न थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. पहाड़िया लोग झूम खेती करते थे और जंगल के उत्पादों से अपनी जीविकोपार्जन करते थे। किंतु संथाल स्थायी खेती करते थे।
2. पहाडिया लोग खेती का कार्य मुख्यतः कुदाल के द्वारा करते थे जबकि संथाल हल से खेती करते थे। अपने परिश्रम से उन्होंने चट्टानी भूमि को भी अत्यधिक उपजाऊ बना दिया था।
3. झूम खेती करना, खाद्य संग्रह, काठ कोयला बनाना, रेशम के कीड़े पालना आदि पहाडिया लोगों के मुख्य व्यवसाय थे और खानाबदोश जीवन जीते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. संथाल स्थायी रूप से एक स्थान पर रहते थे और बढ़िया तम्बाकू और सरसों जैसी वाणिज्यिक फसलें उगाते थे। व्यापारी और साहूकारों के साथ लेन देन भी करते थे।

5. पहाडिया लोग असभ्य और बर्बर जीवन जीते थे जबकि संथालों का जीवन कुछ सभ्य था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

8. अमेरिकी गृह युद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

Under CSR Support by ipca | Foundation

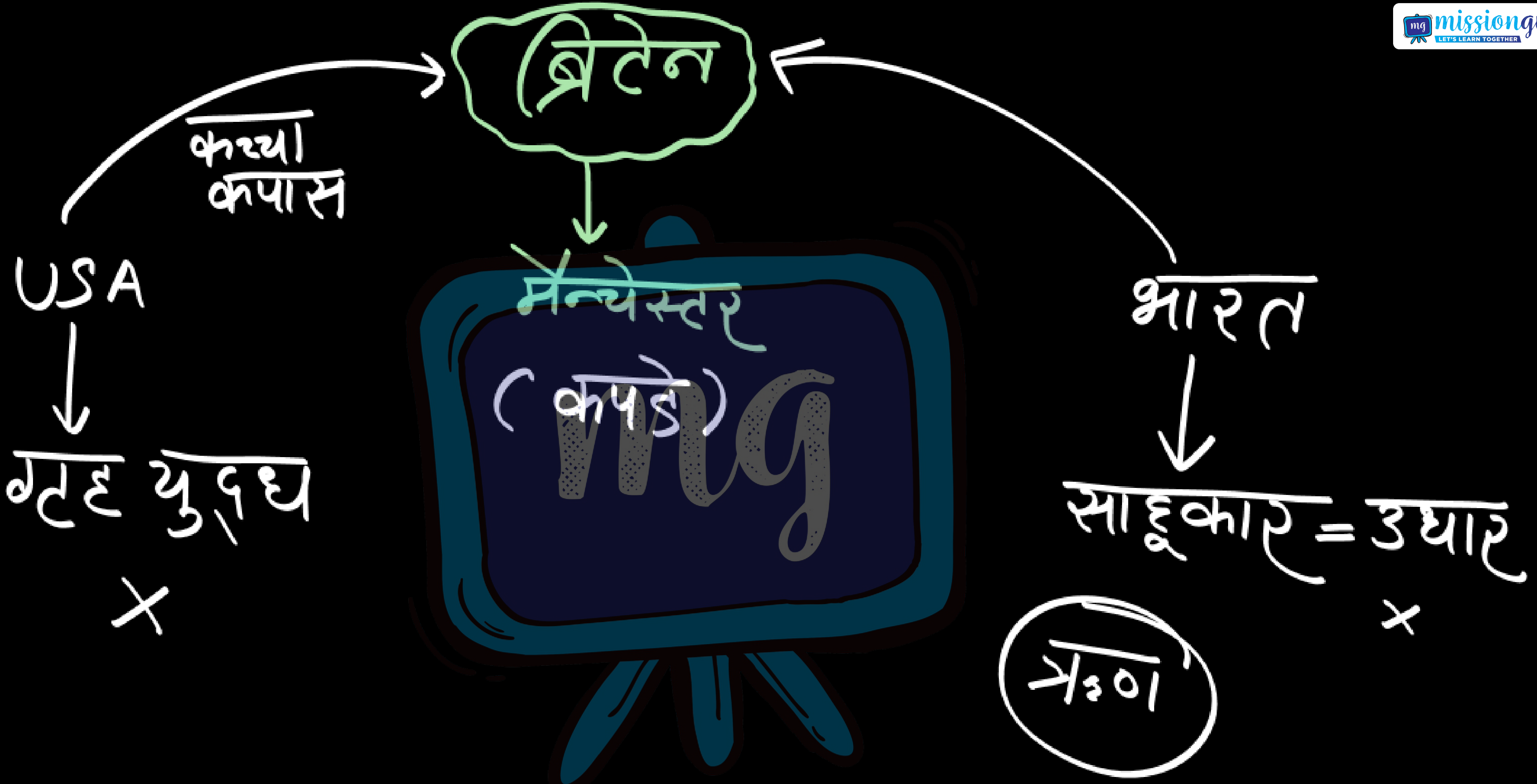

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

- जब 1861 में अमेरिका में गृह युद्ध छिड़ गया तो ब्रिटेन के कपास क्षेत्र में तहलका मच गया। अमेरिका से आने वाली कपास में काफी गिरावट आयी। जो लंकाशायर का मैनचेस्ट के वस्त्र उद्योगों के लिए कच्चा माल था।
- ब्रिटेन में कुल कपास का 3/4 भाग अमेरिका से आता था।
- अमेरिकी गृहयुद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को निम्न तरीके से प्रभावित किया –

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. सरकार ने भारतीय रैयतों को अधिक मात्रा में कपास पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया।
2. सौदागरों को ब्रिटेन की तरफ से अग्रिम राशि उधार दी गयी और सौदागरों ने प्रति एकड़ के हिसाब से 100 रूपये रैयतों को अग्रिम राशि दी जाने लगी।
3. रैयतों के लिए ऋण के स्त्रोत बढ़ गए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. भारत में खाद्यान्न उत्पादन में कमी आयी और कपास का उत्पादन बढ़ गया। 1862 तक स्थिति यह आयी कि ब्रिटेन में जितना भी कपास का आयात होता था, उसका 90 प्रतिशत भाग अकेले भारत से जाता था।

5. इस तेजी में भी कपास उत्पादकों को समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकी। कुछ धनी किसानों को तो लाभ अवश्य हुआ लेकिन अधिकांश किसान कर्ज के बोझ से और अधिक दब गए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

6. 1865 में अमेरिका में गृहयुद्ध समाप्त हो गया तो वहां कपास का उत्पादन फिर से चालू हो गया। इससे भारतीय कपास की कीमत व निर्यात दोनों में गिरावट आती चली गयी। जिससे कपास उत्पादक रैयतों को काफी नुकसान हुआ।

7. साहूकारों ने रैयत को ऋण देने से मना कर दिया और सरकार द्वारा भू-राजस्व भी बढ़ा दिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

9. किसानों का इतिहास लिखने में सरकारी स्त्रोतों के उपयोग के बारे में क्या समस्याएं आती हैं ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दक्कन दंगा → जाँच → आयोग → रिपोर्ट → 1878

↓

ब्रिटेन संसद

↓

साहूकार → दक्कन दंगा आयोग

ब्याज दर ↑

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

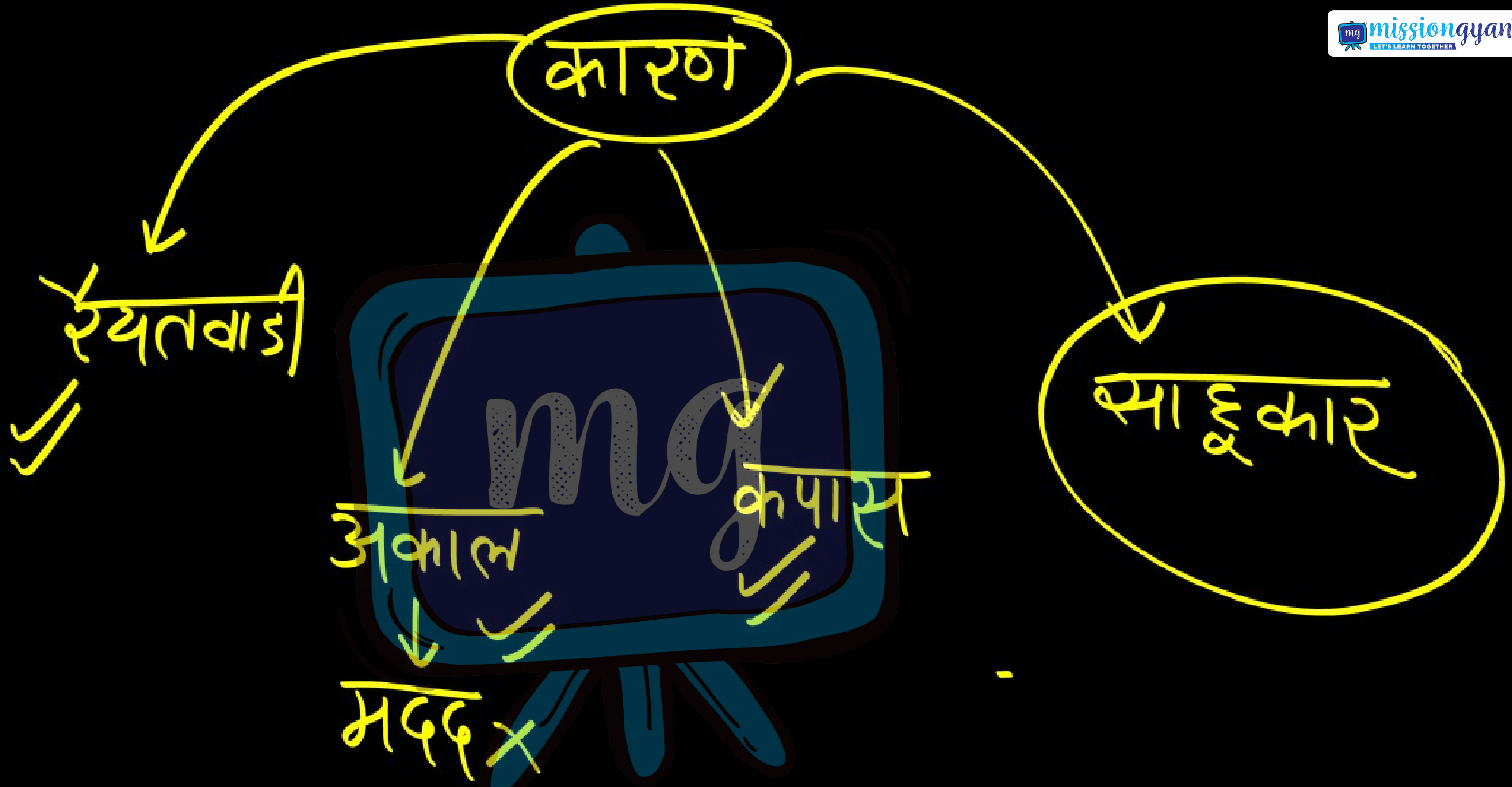

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

1. सरकारी स्त्रोत वास्तविक स्थिति का निष्पक्ष वर्णन नहीं करते। अतः उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों को पूरी तरह सत्य नहीं माना जा सकता।
2. सरकारी स्त्रोत सरकारी दृष्टिकोण एवं अभिप्रायों के पक्षधर होते हैं। वे विभिन्न घटनाओं का विवरण सरकारी दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत करते हैं।
3. सरकारी स्त्रोतों की सहानुभूति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रति ही होती है।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अतः किसान इतिहास लेखन में सरकारी स्त्रोतों का उपयोग करते हुए कुछ बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए –

1. सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन अत्यधिक सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
2. सरकारी रिपोर्टों में उपलब्ध साक्ष्य का मिलान समाचार पत्रों, गैर सरकारी विवरणों, वैधिक अभिलेखों आदि में उपलब्ध साक्ष्यों से करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. रैयतवाड़ी व्यवस्था की कोई दो मुख्य शर्तें बताइए।

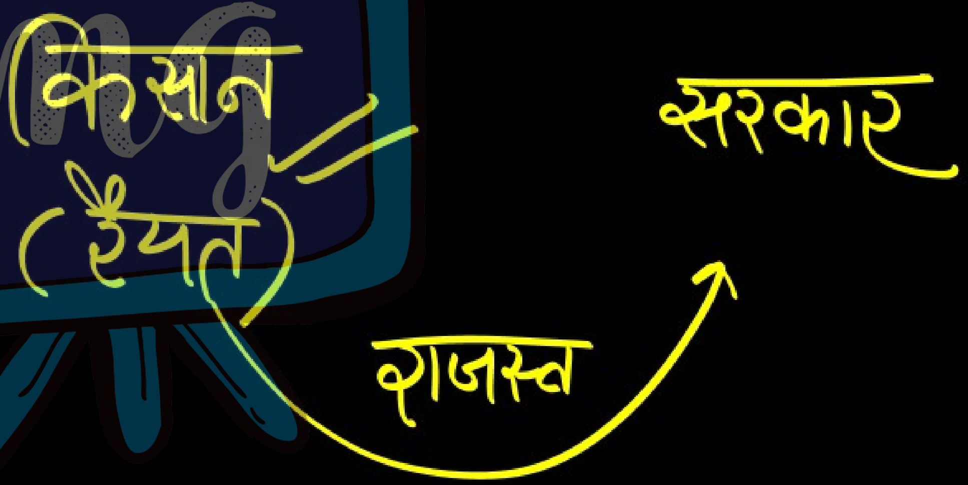

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(i) बम्बई दक्कन में 1820 के दशक में लागू की गई रैयतवाड़ी व्यवस्था में भू-राजस्व वसूली का कार्य सीधा रैयत (किसान) से किया जाता था।

(ii) इस व्यवस्था में भू-राजस्व 30 वर्षों के लिए नियत किया गया था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. रैयतवाड़ी व्यवस्था की कोई दो कमियां बताइए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(i) रैयतवाड़ी व्यवस्था में मांगा गया राजस्व बहुत अधिक था जिसे किसान चूकाने में असमर्थ थे।

(ii) सूखे व कम वर्षा की स्थिति में भी औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा निर्धारित भू-राजस्व में कोई छूट नहीं दी जाती थी और उसे कठोरतापूर्वक वसूला जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

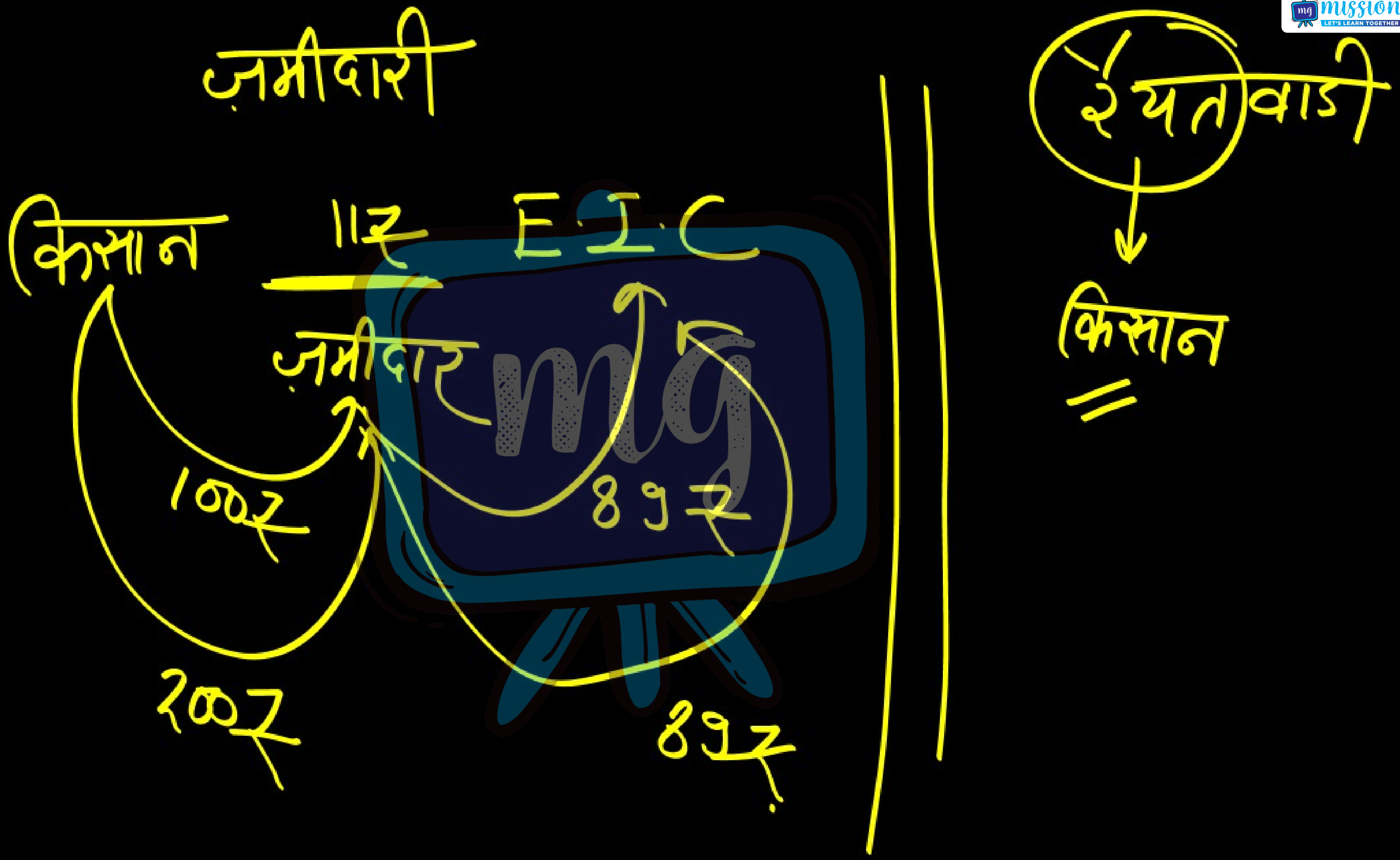

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. दक्कन दंगा रिपोर्ट में किन तथ्यों का संकलन किया गया था?

→ दस्तावेज़

→ कलेक्टर रिपोर्ट

→ रैयत शिकायत

→ अनुबंध

→ साहूकार दस्तावेज़

→ रसीदें

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(i) रैयत, साहुकार एवं चश्मदीद गवाहों के बयान।

(ii) विभिन्न क्षेत्रों की राजस्व की दर, कीमतों एवं ब्याज के आंकड़े।

(iii) जिला क्लेक्टर द्वारा भेजी गई रिपोर्ट।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. अमेरिकी गृहयुद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को कैसे प्रभावित किया ?

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : अमेरिकी गृहयुद्ध से पहले ब्रिटेन अमेरिकी कपास पर निर्भर था जो गृहयुद्ध से प्रभावित हुआ इसलिए भारतीय रैयतों को कपास की कृषि के लिए प्रोत्साहन दिया गया, कृषि क्षेत्र का विस्तार किया गया। इस कारण भारतीय रैयतों की आमदनी में इजाफा हुआ तथा रैयत धनवान होने लगे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. दक्कन के रैयत ऋणदाताओं के प्रति क्रुद्ध क्यों थे ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(i) ऋणदाता वर्ग संवेदनहीन हो गया था, यह रैयतों की हालत पर तरस नहीं खा रहा था।

(ii) ऋणदाता देहात के प्रथागत मानकों का भी उल्लंघन कर रहे थे।

(iii) सामान्य मानक यह था कि ब्याज मूलधन से अधिक नहीं लिया जा सकता था लेकिन ऐसा नहीं हो रहा था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

6. भाड़ा-पत्र क्या होता था ?